Dr. Jaya
Deptt of Sociology
B.A Part I (Hons) Paper-2
Unit-4, Lecture series:- 98
Date:- 04/08/2020

Topic – Characteristic of social fact

दुर्खीम ने सामाजिक तथ्यों की प्रकृति को इनकी दो विशेषताओं के आधार पर स्पष्ट किया है। इनमें से पहली विशेषता सामाजिक तथ्यों की बाह्यता (Exteriority) है जबकि दूसरी विशेषता इनमें बाध्यता का (Constraint) गुण होता है।

1) सामाजिक तथ्यों में बाह्यता का गुण होता है – यह सच है कि विभिन्न प्रकार के सामाजिक तथ्यों का निर्माण व्यक्तियों के द्वारा ही किया जाता है लेकिन एक बार जब कोई सामाजिक तथ्य विकसित हो जाता है तो फिर उसका अस्तित्व व्यक्ति से स्वतंत्र हो जाता है। इसे स्पष्ट करने के लिए दुर्खीम ने बताया कि सामाजिक तथ्यों का निर्माण सामूहिक चेतना से होता है। यह सामूहिक चेतना व्यक्तिगत चेतना से बिलकुल अलग होती है। इसका आशय यह है कि एक बार जब सामाजिक तथ्यों में सामूहिक चेतना शामिल हो जाती है, तब व्यक्ति उसके अधीन हो जाता है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि सामूहिक चेतना से पैदा होने वाले सामाजिक तथ्य व्यक्ति के नियंत्रण और शक्ति से बाह्य हो जाते हैं। उदाहरण के लिए धर्म एक सामाजिक तथ्य है। धर्म से संबंधित विश्वासों और व्यवहार के तरीकों को समूह के द्वारा ही विकसित किया

Scanned with CamScanner

जाता है लेकिन बाद में यह विचार और व्यवहार के तरीके समूह और व्यक्ति से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो जाते हैं। यही कारण है कि व्यक्ति एक विशेष परिस्थिति में सामाजिक तथ्यों के अनुसार ही विचार और व्यवहार करता है। वह अपनी व्यक्तिगत इच्छा से सामाजिक तथ्यों में कोई परिवर्तन नहीं कर सकता है।

2) सामाजिक तथ्यों में बाह्यता का गुण होता है — सामाजिक तथ्य इस दृष्टिकोण से बाध्यताकारी होते हैं कि यह व्यक्ति को एक विशेष ढंग से विचार करने और व्यवहार करने को बाध्य करते हैं। इनका व्यक्ति पर इतना अधिक दबाव होता है कि वह अपनी इच्छा या अनिच्छा से उनके विरुद्ध नहीं जा सकता है। सामाजिक तथ्यों में बाह्यता का गुण इस बात से भी स्पष्ट होता है कि यह प्रत्येक दशा में व्यक्ति के व्यवहार को प्रभावित करते हैं लेकिन व्यक्ति अपनी इच्छानुसार इन्हें नहीं बदल सकता है। इसका कारण स्पष्ट करते हुए दुर्खीम ने बताया कि सामूहिक चेतना वैयक्तिक चेतना से कहीं अधिक शक्तिशाली होती है। अतः सामाजिक तथ्यों में बाह्यता का गुण आ जाना बहुत स्वाभाविक है।

Normal and Pathological facts

सामाजिक तथ्यों की प्रकृति को स्पष्ट करने के लिए दुर्खीम ने इनके दो मुख्य प्रकारों का उल्लेख किया है! —

1) सामान्य सामाजिक तथ्य — दुर्खीम के अनुसार सामान्य सामाजिक तथ्य वे हैं जो एक विशेष

अवधि में किसी समाज में सामान्य रूप से पाये जाते हैं। सामाजिक संगठन की प्रकृति को निर्धारित करने में इनकी मुख्य भूमिका होती है। विभिन्न समाजों में सामान्य सामाजिक तथ्यों की प्रकृति एक-दूसरे से कुछ अलग हो सकती है। इसके बाद भी यह तथ्य सामाजिक व्यवस्था के लिए उपयोगी भूमिका निभाते हैं।

2) व्याधिकीय सामाजिक तथ्य – इनका आशय उन दशाओं से है जो समाज के लिए हानिकारक होती हैं तथा जनसाधारण के जीवन को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करती है। ऐसे तथ्य एक विशेष अवधि में समाज द्वारा मान्यता प्राप्त नहीं होते। दुर्खीम के अनुसार किसी समाज के एक बड़े हिस्से को क्षति पहुँचाने वाली दशाएं Pathological facts को जन्म देती हैं।